Vishvakarma Ashtottarashatanamavalih

विश्वकर्माष्टोत्तरशतनामावलिः

Document Information

Text title : Vishvakarma Ashtottarashatanamavalih 2

File name : vishvakarmAShTottarashatanAmAvaliH2.itx

Category : deities_misc, nAmAvalI, aShTottarashatanAmAvalI

Location : doc_deities_misc

Proofread by : Divya KS, Jagannadha Rao

Latest update : January 17, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 17, 2024

sanskritdocuments.org

Vishvakarma Ashtottarashatanamavalih

विश्वकर्माष्टोत्तरशतनामावलिः

विश्वकर्मा नामसङ्ग्रह ।

१. अधिकर्मिक - अन्यों के द्वारा किए हुए कार्यों का निरीक्षण करने वाला ।

२. अतुल - जिसकी किसी से तुलना न हो सके ।

३. अज - अर्थात् जिसका जन्म न हो । जैसे ब्रह्म, ब्रह्मा, शिव जन्म-मरण से रहित ।

४. आनन्त्य - जो अनन्त और असीम हो ।

५. अर्चनीय - जो सभी के द्वारा पूजा के योग्य हो, जो सर्वाधिक सम्माननीय हो ।

६. अभिक्षक - सुरक्षा में सदैव तत्पर रहने वाला ।

७. अधिष्ठाता - निरीक्षक, स्वामी तथा वह पुरुष जिसमें दूसरों को वश में रखने की क्षमता हो ।

८. अधिनायक - सबको अपने अधीन रखने में समर्थ ।

९. अभिनन्द्य - प्रशंसा या वन्दना करने योग्य ।

१०. आदिकर - सृष्टि को आरम्भ करने वाला, सृष्टिकता ।

११. अधीश्वर - नेता, स्वामी, प्रभाव वाला विशिष्ट पुरुष ।

१२. अभिधेय - सर्वसार, निष्कर्ष, अविकल अर्थ याला ।

१३. अभ्युदयकारी - समृद्धि एवं वैभव से सम्पन्न करने वाला ।

१४. आधृंयकर - अत्यन्त सम्पत्ति प्राप्त करने वाला ।

१५. अमन्द - जो अपने कार्य में सुस्त न हो । क्रियाशील तथा कार्यकुशल हो ।

१६. आराधनीय - जो सब प्रकार से आराधना और पूजा करने के योग्य हो ।

१७. आनन्दन - सुखरूप, उपकारी, हितैषी । जो अपने गुण, कर्म, प्रभाव से सभी को प्रसन्न करे ।

१८. आयःशूलिक - कार्य-कुशल, चतुर तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति में निरन्तर तत्पर रहने वाला ।

१९. इरेश - विष्णु, वरुण, गणेश्वर, अधीश्वर आदि ।

२०. ईश्वर - सर्व वैभवों से सम्पन्न सभी का तथा सब प्रकार से समर्थ ।

२१. ईक्षक - सवको देखने वाला या समदर्शी पुरुष ।

२२. उद्यमी - सद प्रकार के उद्यमों में चतुर, परिश्रम से कभी पीछे नहीं हटने वाला, निरालस्य ।

२३. उत्पादक - उत्पन्न करने वाला, कार्यों को पूर्ण करने वाला ।
२४. उच्चण्ड - स्फूर्तिवान, अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक कार्यों को सम्पन्न करने वाला ।
२५. उत्तम श्लोक - आदर्श पुरुष, प्रतिष्ठित, सबसे बडा एवं यशस्वी ।
२६. एकान्त - एक ही वस्तु को लक्ष्य में रखने वाला ।
२७. एकाक्षर - प्रणवस्वरूप परमात्मा, एक ही ऐसा जो कभी क्षरण को प्राप्त न हो ।
२८. ऐश्वर्यवन्त - ऐश्वर्यशाली, वैभवशाली ।
२९. ऐकात्म्य - परमात्मा तुल्य, परमात्मास्वरूप ।
३०. औपमिक - तुलना के योग्य ।
३१. ओजस्वी - ओज से सम्पत्र, अत्यन्त शक्तिशाली ।
३२. क - यह व्यापक शब्द है । इसके अनेक अर्थ हैं, रचयिता, ब्रह्मा, विष्णु विश्वकर्मा, वायु, अग्नि कामदेव, यम, सूर्य, जीवात्मा आदि ।
३३. कल्याणक - शुभदायक, समृद्धिशाली, मङ्गलकारी ।
३४. कष्टक विशोधक - सभी बाधाओं को दूर करने वाला ।
३५. काला - काल का ज्ञाता ।
३६. कार्मुक - सभी कर्मों को सुचारू रूप से करने वाला ।
३७. कालाध्यक्ष - काल को अपनी इच्छानुसार चलाने वाला ।
३८. कीर्तिकीय - जो सुन्दर कीर्ति वाला हो ।
३९. कुशाग्रबुद्धि - जो अत्यन्त बुद्धिमान हो ।
४०. कृतायास - जो सभी प्रकार के प्रयलों में सफल हो ।
४१. कृताभरण - सब प्रकार से सुसज्जित, विभूषित ।
४२. कृतकार्य - जो सब कार्यों को पूर्ण करने में समर्थ हो ।
४३. कृतागम - योग्य कार्यकुशल, परमात्मा ।
४४. कृतहस्त - समस्त विधाओं और कलाओं में निपुण हो ।
४५. कृतधी - स्थिर बुद्धि वाला, निश्चय करें उसे पूरा करे ।
४६. कृत सङ्कल्प - जो विचारे उसे पूरा अवश्य करे ।
४७. कृतप्रतिज्ञ - जो प्रतिज्ञा कर ले, उसको पूर्ण किये बिना न रहे ।
४८. कृतलक्षण - जो अपने गुणों के कारण प्रसिद्धि प्राप्त हो ।
४९. कृपालु - उदार हृदय वाला, सभी पर कृपा करने वाला ।
५०. कृती - सभी कामों को करने में दक्ष ।
५१. कृत्नु - सब प्रकार से योग्य ।
५२. केलिमुख - कार्यों को क्रीड् के समान प्रसन्नतापूर्वक करने वाला ।
५३. केतक - नगर, भवन आदि का निर्माण करने वाला, सङ्कल्पमय ।

५४. कौतुकप्रिय - विश्व-निर्माण के कार्य को प्रसन्नतापूर्वक करने वाला ।
५५. क्रतुपति - विश्व रचना को पूर्ण करने में समर्थ ।
५६. क्रतुप्रिय - सर्गरूप यज्ञ करने में प्रसन्न होने वाला ।
५७. क्रियापट - विश्व की समस्त क्रियाओं में सब प्रकार से निपुण ।
५८. क्वाचित्क - असामान्य, विशिष्ट, दुर्लभ, प्रयत्नों से कभी-कभी मिलने वाला ।
५९. क्षिप्रकारी - शीघ्रता से कार्य करने वाला। स्फूर्तिवान, शीघ्रगामी ।
६०. क्षिन्ता - धैर्यवान, सहनशील, साहसी, शान्त स्वभाव वाला ।
६१. ख्यातिप्राप्त - अत्यन्त प्रसिद्ध, कीर्तिमान स्थापित करने वाला, प्रशंसनीय ।
६२. गमनीय - समझने के योग्य जिसका बोध किया जा सके ।
६३. गणितज्ञ - सब प्रकार के गणितों का ज्ञान रखने वाला ।
६४. गण्डकघ्न - सब प्रकार की बाधाओं व आड्चनों को दूर करने वाला ।
६५. गुणी - सर्वगुणों से सम्पन्न ।
६६. चक्री - कुम्हार, राजा या संराट, मदारी के तुल्य नचाने वाला ।
६७. चक्रवर्ती - सभी का स्वामी, अधीश्वर, सर्वोच्च शासक शासन समर्य ।
६८. चण्ड विक्रम - अत्यन्त पराक्रमी ।
६९. चण्ड - स्फूर्तिवान, कर्मठ ।
७०. चञ्चुर - सब प्रकार से कार्य कुशल ।
७१. चारक - चालाक, नायक, नेता ।
७२. चिन्मय - विशुद्ध ज्ञानस्वरूप ईश्वर ।
७३. चित्रकार - विश्व-दृश्य का ईश्वर ।
७४. छत्वरक - उद्यान, भवनादि का निर्माता व विशेषज्ञ ।
७५. जनप्रिय - प्राणियों का आश्रय स्थल ।
७६. जगदीश्वर - संसार का स्वामी ।
७७. जगत्सष्टा - विश्व का रचयिता ।
७८. जागरूकय - स्वकार्य के प्रति सदैव सतर्क रहने वाला ।
७९. जिष्णु - विजयी, परमात्मा परब्रह्म, विष्णु, इन्द्र, सूर्य, विश्वकर्मा आदि देवता ।
८०. तक्षिणकर्मी - प्रतिदान या प्रतिफल की आशा का त्याग करने वाला ।
८१. तक्षक - सूत्रधार, देवताओं का कारीगर ।
८२. तितिक्षु - सहनशील, दयालु ।
८३. त्यागी - प्रतिदान या प्रतिफल की आशा का त्याग करने वाला ।
८४. त्वष्टा (त्वष्ट्र) - तीनों लोक की रचना में समर्थ, विश्वकर्मा ।
८५. त्रिकालविद् - तीनों काल (भूत, भविष्यत, वर्तमान)का ज्ञाता ।

८६. दाता - सब कुछ देने में समर्थ, दानशील स्वभाव वाला ।
८७. दक्ष - तत्काल कार्य करने में कुशल, समर्थ एवं सशक्त ।
८८. विष्णु - दाता ।
८९. दिव्य - अलौकिक, चमकदार, सुन्दर मनोहर ।
९०. दृप्त - तेजोमय, प्रकाशवान् ।
९१. देवशिल्पी - देवताओं का रचयिता विश्वकर्मा ।
९२. देववर्धकि - देवताओं के लिए श्रेष्ठ ।
९३. घृतात्मा - सुदृढ़ सङ्कल्प वाला, प्राणपालक ।
९४. नमस्य - सम्माननीय, प्रार्थनीय अथवा वन्दनीय ।
९५. नन्दक - सुख प्रदान करने वाला ।
९६. निरज - कार्य करने में प्रसन्न रहने वाला ।
९७. नित्य - सदैव विद्यमान रहने वाला ।
९८. निपुण - अपने कार्य में कुशल ।
९९. नियामक - सब पर शासन करने वाला ।
१००. परावर - दूर भी, पास भी सर्वत्र निवास करने वाला ।
१०१. पटु - कार्य में कुशल ।
१०२. पृथु - महान, विस्तृत, कार्य-कुशल, चतुर, दक्ष ।
१०३. पारङ्गत - जो किसी विधा विशेष का पूर्ण ज्ञाता हो ।
१०४. विश्वकर्मा - समस्त लोकों का निर्माण करने वाला ।
१०५. ब्रह्मवत् - ब्रह्म के समान शक्तिशाली ।
१०६. विश्वात्मा - जो समस्त जीवों में आत्मारूप हो ।
१०७. सृष्टिकर्ता - सृष्टि को रचने वाला ।
१०८. सर्वेश्वर - सब देवताओं में सर्वमान्य देवता ।

इति

Vishvakarma Ashtottarashatanamavalih
pdf was typeset on January 17, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*